पाठ 4. ऐसे थे तिलक

पाठ का परिचय

यह घटना उन दिनों की है जब लोकमान्य तिलक स्कूल में पढ़ते थे। एक दिन अध्यापक महोदय छात्रों को पढ़ा रहे थे लेकिन तिलक अपने सहपाठी से बातें करने में मग्न थे। अध्यापक महोदय ने उन्हें खड़ा किया और पाठ के विषय में प्रश्न पूछे। तिलक ने सही-सही जवाब सुना दिए। अध्यापक महोदय ने तिलक के सहपाठी से कहा कि तुम बातें कर रहे थे, तिलक नहीं। अत: तुम खड़े हो जाओ। तिलक को यह बात अन्यायपूर्ण लगी। उन्होंने अपना दंड स्वीकार लिया। अध्यापक महोदय को तिलक की तीव्र बुद्धि के बारे में पता चला तो उन्होंने तिलक को बताया कि तीव्र बुद्धि का मतलब यह नहीं कि तुम दूसरों की पढ़ाई में अड़चन डालो। तिलक ने अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी। यही तिलक बड़े होकर एक महान नेता बने।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

बुद्धिमान होने के साथ-साथ सच्चा होना भी उतना ही आवश्यक है। महान बनने के लिए शुद्ध विचार व सच्ची राह को अपनाना चाहिए। केवल बुद्धिमान होना ही श्रेष्ठता की निशानी नहीं है। बुद्धि का प्रयोग सही दिशा में करना भी आवश्यक है।

पाठ का वाचन

पहले अध्यापक/अध्यापिका आदर्श वाचन करें। एक-एक अनुच्छेद बच्चों से बारी-बारी पढ़वाएँ। अध्यापक महोदय, तिलक व बालकों की बातचीत को संवाद-रूप में पढ़वाएँ। बीच-बीच में अनुच्छेद पर आधारित प्रश्न पूछें। उच्चारण की शुद्धता पर ध्यान दें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से निम्न प्रश्न कर चर्चा करें –

- तिलक जी ने जो किया वह सही था या गलत?
- तिलक जी की जगह तुम होते तो क्या करते?
- क्या ऐसा हुआ है कि तुम्हारी वजह से तुम्हारे किसी मित्र को डाँट खानी पड़ी हो?
- तुमने कभी अपने किसी मित्र की सहायता की है?
- बुद्धि का प्रयोग सही दिशा में किस प्रकार किया जा सकता है?
- सभी बच्चों को अपने विचार अभिव्यक्त करने का अवसर दें।